प्रभात

अमिया

"अमिया चलो स्कूल का काम करो।" माँ ने आवाज़ लगाई।

"पहले दो बजे तक खेल लूँ।" आवाज़ के जवाब में अमिया ने भी आवाज़ लगा दी।

"पहले इधर आ।" माँ ने फटकारते हुए कहा।

"पहले खेल।" अमिया ने भी वैसा ही जवाब दिया।

"बहुत सिर चढ़ गई है तू।" माँ ने डाँटा।

"नहीं, मैं दीवार पर चढ़ रही हूँ।" अमिया ने माँ की बात को काटा और दीवार पर चलते हुए आई।

"कल क्या कहा था तूने कि आते ही पहले स्कूल का काम करेगी फिर खेलने जाएगी।" माँ ने याद दिलाया।

"तो कल से करूँगी न।" अमिया ने कहा।

"आज हो गया कल।" माँ ने कहा।

"कल आज ही कैसे हो सकता है। कल तो कल ही होगा।" अमिया ने घुमाया।

"गए कल का कल आज है।" माँ बोली।

"आज है, पर कल तो नहीं है न।" अमिया ने और घुमाया।

"अब ज़्यादा मेरा सिर मत चाट। चुपचाप काम कर ले।" माँ ने बस्ता थमाते हुए कहा।

अमिया ने बस्ता खोला, काम देखा। दस विलोम शब्द लिखकर लाने हैं। माँ से कहा, "मुझे विलोम शब्द लिखने हैं। लिखाओ।"

"लिख ले तू। मैं क्या लिखाऊँ।" माँ कम पढ़ी-लिखी थी। और जो पढ़ा था उसे भी अब भूल गई थी।

"विलोम शब्द क्या होते हैं।" अमिया चिल्लाई।

"मुझसे क्या पूछती है? तेरी मास्टरनी ने नहीं बताया क्या?" माँ ने कन्नी काटी।

"नहीं बताया। लिखा दिया बस कि दस विलोम शब्द लिखने हैं।" अमिया खीजी।

"तो तू लिख ले।" माँ को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे?

"क्या लिख लूँ? बता दो वरना मैं चली खेलने।" अमिया ने धमकी दी।

"अरे लिख ले – छोटा-छोटी, मोटा-मोटी, बकरा-बकरी, ऐसे लिख ले जा।" माँ ने कपड़े पछीटते हुए कहा।

"ये विलोम शब्द हैं क्या?" अमिया को शक हुआ।

"ये नहीं होंगे तो वो ठीक करा देगी।" माँ ने टंटा खत्म किया।

"ठीक है, मैं लिख रही हूँ। पर ये तो तीन ही हुए।" अमिया ने कहा।

"बाकी तू सोचकर लिख ले।" माँ ने कपड़े निचोड़ते हुए कहा।

"लिख लूँगी पर गलत हुए तो कह दूँगी तुमने बताए थे।" अमिया ने चेताया।

"कह देना। मेरा क्या करेगी वो मुई। बच्चों को बताती तो है नहीं। काम दे देती है हमारी जान खाने।" माँ ने तार पर कपड़े डालते हुए कहा।

अमिया ने कॉपी में बाकी के सात शब्द और उनके विलोम झटपट लिख लिए। और खेलने चली गई।

अगले दिन कक्षा में अध्यापिका ने अमिया की कॉपी में विलोम शब्द देखे। लिखा था, "छोटा-छोटी, मोटा-मोटी, बकरा-बकरी, कमरा-कमरी, चूला-चूली, झूला-झूली, मूला-मूली, दूल्हा-दूल्ही, माथा-माथी, कट्टा-कट्टी।"

"यह क्या है ?" अध्यापिका ने अमिया के सिर पर कॉपी फेंककर कहा।

"विलोम शब्द।" कहते हुए अमिया की आँखें छलछला गईं। अध्यापिका ने भरी कक्षा में कॉपी फेंककर उसे अपमानित किया था।

"किसने बताए ऐसे?" अध्यापिका ने पूछा।

"किसी ने नहीं बताए। मैंने ही लिखे हैं।" अमिया नहीं चाहती थी कि अध्यापिका को पता चले कि उसकी माँ को विलोम शब्द भी नहीं आते। उसे पता था कि माँ विलोम शब्द नहीं जानती तो क्या हुआ, उसे प्यार से रखना तो जानती है।

अमिया ने कॉपी समेटकर बस्ते में रखी और चुपचाप बैठ गई।

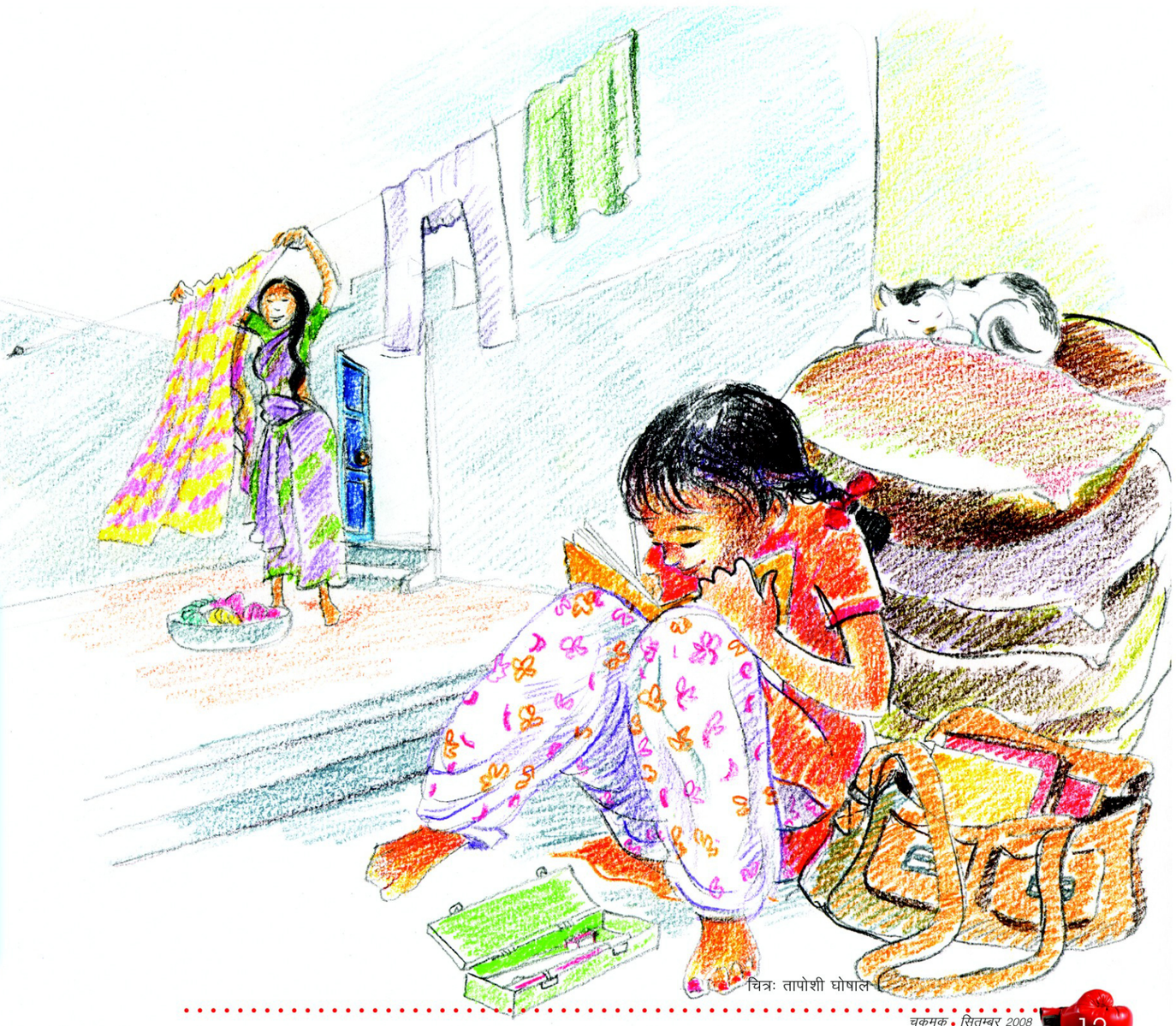

चित्रः तापोशी घोषाल

बेजिंग ऑलम्पिक ने शैली अन फ्रेज़र को दुनिया की सबसे तेज़ दौड़ाक बना दिया है। वे जमैका की रहने वाली हैं। शैली ने यह कमाल कड़े प्रशिक्षण के बलबूते पर नहीं किया। अपनी माँ के साथ तंग और बदहाल बस्ती में रहने वाली शैली के लिए तेज़ दौड़ना मजबूरी थी। शैली की माँ अपना परिवार चलाने के लिए सड़क किनारे ठेला लगाती थीं। सड़क किनारे ठेले लगाने वालों को हमेशा पुलिस पर नज़र रखनी होती है। शैली को भी पुलिस के आते ही फुर्ती से सामान समेट तेज़ी से भागना होता था। और बचपन की यह दौड़ शैली के इस तरह काम आई। इस कामयाब एथलीट का परिवार आज भी जमैका की एक बेहद तंग बस्ती में किराए के मकान में रहता है।